

रविवार 2 फ़रवरी, 2025

विषय— प्रेम

स्वर्ण पाठ: रोमियो 8: 28

"जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है।"

उत्तरदायी अध्ययन: 1 यूहन्ना 4: 7-12

- ⁷ हे प्रियों, हम तुम में प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम नहीं करता, वह भगवान से जन्मा है; और भगवान को पता है।
- ⁸ जो प्रेम नहीं रखता, वह भगवान को नहीं जानता, क्योंकि भगवान प्रेम है।
- ⁹ जो प्रेम भगवान हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि भगवान ने अपने एकलौते पुत्र को अवतार में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।
- ¹⁰ प्रेम इस में नहीं कि हमने भगवान को प्रेम किया है; पर इस में है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा।
- ¹¹ हे प्रियो, जब भगवान ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
- ¹² परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यिर्मयाह 31: 3

- ³ यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।

2. इफिसियों 5: 1, 2

- ¹ इसलिये प्रिय, बालकों की नाई परमेश्वर के सदृश बनो।

- 2 और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।

3. रूत 1: 1 (एक निश्चित आदमी)-6, 8, 14 (और ओर्पा), 16, 19 (से 1st.)

- 1 ... यहूदा के बेतलेहेम का एक पुरुष अपनी स्त्री और दोनों पुत्रों को संग ले कर मोआब के देश में परदेशी हो कर रहने के लिये चला।
- 2 उस पुरुष का नाम एलीमेलेक, और उसकी पत्नी का नाम नाओमी, और उसके दो बेटों के नाम महलोन और किल्योन थे।
- 3 और नाओमी का पति एलीमेलेक मर गया, और नाओमी और उसके दोनों पुत्र रह गए।
- 4 और इन्होंने एक एक मोआबिन ब्याह ली; एक स्त्री का नाम ओर्पा और दूसरी का नाम रूत था। फिर वे वहां कोई दस वर्ष रहे।
- 5 जब महलोन और किल्योन दोनों मर गए, तब नाओमी अपने दोनों पुत्रों और पति से रहित हो गई।
- 6 तब वह मोआब के देश में यह सुनकर, कि यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों की सुधि लेके उन्हें भोजनवस्तु दी है, उस देश से अपनी दोनों बहुओं समेत लौट जाने को चली।
- 8 तब नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, तुम अपने अपने मैके लौट जाओ। और जैसे तुम ने उन से जो मर गए हैं और मुझ से भी प्रीति की है, वैसे ही यहोवा तुम्हारे ऊपर कृपा करे।
- 14 ... और ओर्पा ने तो अपनी सास को चूमा, परन्तु रूत उस से अलग न हुई।
- 16 रूत बोली, तू मुझ से यह बिनती न कर, कि मुझे त्याग वा छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी; जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।
- 19 सो वे दोनों चल निकलीं और बेतलेहेम को पहुंची।

4. रूत 2: 1, 2, 8-12

- 1 नाओमी के पति एलीमेलेक के कुल में उसका एक बड़ा धनी कुटुम्बी था, जिसका नाम बोअज था।
- 2 और मोआबिन रूत ने नाओमी से कहा, मुझे किसी खेत में जाने दे, कि जो मुझ पर अनुग्रह की दृष्टि करे, उसके पीछे पीछे मैं सिला बीनती जाऊं।
- 8 तब बोअज ने रूत से कहा, हे मेरी बेटी, क्या तू सुनती है? किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना, मेरी ही दासियों के संग यहीं रहना।
- 9 जिस खेत को वे लवतीं हों उसी पर तेरा ध्यान बन्धा रहे, और उन्हीं के पीछे पीछे चला करना। क्या मैं ने जवानों को आज्ञा नहीं दी, कि तुझ से न बोलें? और जब जब तुझे प्यास लगे, तब तब तू बरतनों के पास जा कर जवानों का भरा हुआ पानी पीना।

- 10 तब वह भूमि तक झुककर मुंह के बल गिरी, और उस से कहने लगी, क्या कारण है कि तू ने मुझ परदेशिन पर अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि ली है?
- 11 बोअज ने उत्तर दिया, जो कुछ तू ने पति मरने के पीछे अपनी सास से किया है, और तू किस रीति अपने माता पिता और जन्मभूमि को छोड़कर ऐसे लोगों में आई है जिन को पहिले तू ने जानती थी, यह सब मुझे विस्तार के साथ बताया गया है।
- 12 यहोवा तेरी करनी का फल दे, और इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके पंखों के तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा बदला दे।

5. रूत 4: 13, 17

- 13 तब बोअज ने रूत को ब्याह लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई; और जब वह उसके पास गया तब यहोवा की दया से उसको गर्भ रहा, और उसके एक बेटा उत्पन्न हुआ।
- 17 और उसकी पड़ोसिनों ने यह कहकर, कि नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है, लड़के का नाम ओबेद रखा। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ॥

6. 1 यूहन्ना 4: 16 (भगवान है)-19

- 16 और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है: जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है।
- 17 इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं।
- 18 प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।
- 19 हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया।

7. यूहन्ना 13: 31 (ईश ने कहा) केवल, 34, 35

- 31 यीशु ने कहा।
- 34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो।
- 35 यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो॥

8. इब्रानियों 10: 23, 24

- 23 और अपनी आशा के अंगीकार को दृढता से थामें रहें; क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा है।

24 और प्रेम, और भले कामों में उक्साने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें।

9. 1 पतरस 3: 8-12 (सैः)

- 8 निदान, सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखने वाले, और करुणामय, और नम्र बनो।
- 9 बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इस के विपरीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो।
- 10 क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे।
- 11 वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूंढे, और उस के यत्न में रहे।
- 12 क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उन की बिनती की ओर लगे रहते हैं॥

10. 1 पतरस 5: 2-4

- 2 कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर।
- 3 और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिये आदर्श बनो।
- 4 और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 6: 17 ("ईश्वर)-18

"भगवान प्यार है।" इससे अधिक हम पूछ नहीं सकते, उच्च हम नहीं देख सकते हैं, आगे हम नहीं जा सकते।

2. 45: 17-24

ईश्वर और मनुष्य के लिए प्यार हीलिंग और शिक्षण दोनों में सच्चा प्रोत्साहन है। प्रेम प्रेरणा देता है, रोशनी करता है, नामित करता है और मार्ग प्रशस्त करता है। सही इरादों ने विचार, और ताकत और बोलने और कार्रवाई करने की स्वतंत्रता को चुटकी दी। सत्य की वेदी पर प्रेम पुरोहिती है। दिव्य प्रेम के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करें नश्वर मन के पानी पर आगे बढ़ने के लिए, और सही अवधारणा बनाएं। धीरज "को अपना पूरा काम करने दो॥"

3. 13: 2-4

प्रेम अपने अनुकूलन और सर्वश्रेष्ठ में निष्पक्ष और सार्वभौमिक है। यह खुला फव्वारा है जो कहता है, "हो, हर एक कि प्यास, तुम पानी के करीब आओ।"

4. 112: 32 (ईश्वर)-8

ईश्वर दिव्य तत्वमीमांसा का सिद्धांत है। जैसा कि एक ईश्वर है, लेकिन सभी विज्ञानों का एक ईश्वरीय सिद्धांत हो सकता है; और इस ईश्वरीय सिद्धांत के प्रदर्शन के लिए निश्चित नियम होने चाहिए। विज्ञान का पत्र बहुतायत से आज मानवता तक पहुंचता है, लेकिन इसकी भावना केवल छोटी डिग्री में आती है। ईसाई विज्ञान का महत्वपूर्ण हिस्सा, हृदय और आत्मा, प्रेम है। इसके बिना यह पत्र विज्ञान का मृत शरीर, स्पंदनहीन, ठंडा, निर्जीव है।

5. 19: 6-11

यीशु ने मनुष्य को ईश्वर की शिक्षा, यीशु की शिक्षाओं के दिव्य सिद्धांत, और प्रेम के इस तुच्छ अर्थ को मनुष्य की आत्मा, के नियम, और मृत्यु के नियम से मनुष्य की मृत्यु के रूप में समझने की कोशिश की। ईश्वरीय प्रेम का नियम।

6. 494: 10-15

ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है।

7. 242: 15 (आत्म-प्रेम)-20

स्व-प्रेम एक ठोस शरीर की तुलना में अधिक अपारदर्शी है। एक रोगी ईश्वर की आज्ञाकारिता में, प्रेम के सार्वभौमिक विलायक के साथ भंग करने के लिए हमें श्रम करना चाहिए, - आत्म-इच्छा, आत्म-औचित्य, और आत्म-प्रेम, - जो आध्यात्मिकता के खिलाफ युद्ध करता है और पाप का कानून मौत।

8. 337: 7-13

सच्ची खुशी के लिए, मनुष्य को अपने सिद्धांत, दिव्य प्रेम के साथ सामंजस्य करना चाहिए; पुत्र को पिता के अनुरूप होना चाहिए, मसीह के अनुरूप होना चाहिए। ईश्वरीय विज्ञान के अनुसार, मनुष्य एक प्रकार से पूर्ण रूप में मन के रूप में है जो उसे बनाता है। मनुष्य होने का सत्य मनुष्य को सामंजस्यपूर्ण और अमर बनाता है, जबकि त्रुटि नश्वर और कलहकारी है।

9. 57: 18-30

खुशी आध्यात्मिक है, जो सत्य और प्रेम से पैदा होती है। यह निःस्वार्थ है; इसलिए यह खुशी अकेले मौजूद नहीं हो सकती है बल्कि सभी मानव जाति को इसे साझा करने की आवश्यकता है।

मानवीय स्नेह व्यर्थ नहीं बहाया जाता, भले ही उसका कोई प्रतिफल नहीं मिलता। प्रेम प्रकृति को समृद्ध करता है, बड़ा करता है, शुद्ध करता है और उसे उन्नत करता है। पृथ्वी के ठंडे धमाके स्नेह के फूलों को उखाड़ सकते हैं, और उन्हें हवाओं में बिखेर सकते हैं; लेकिन शारीरिक संबंधों का यह विचलन ईश्वर के प्रति अधिक निकटता से विचार करने का कार्य करता है, क्योंकि प्रेम संघर्षशील हृदय का समर्थन करता है, जब तक कि वह दुनिया को छोड़ नहीं देता और स्वर्ग के लिए अपने पंखों को खोलना शुरू कर देता है।

10. 266: 6-19

क्या व्यक्तिगत मित्रों के बिना अस्तित्व आपके लिए शून्य होगा? तब वह समय आएगा जब तुम अकेले हो जाओगे, सहानुभूति के बिना रह जाओगे; लेकिन यह प्रतीत होने वाला शून्य पहले से ही दिव्य प्रेम से भरा हुआ है। जब विकास का यह समय आता है, भले ही आप व्यक्तिगत खुशियों की भावना में व्यस्त रहें, आध्यात्मिक प्रेम आपको वह स्वीकार करने के लिए मजबूर करेगा जो आपके विकास को सबसे अच्छा बढ़ावा देता है। मित्र विश्वासघात करेंगे और शत्रु बदनामी करेंगे, जब तक कि सबक तुम्हें ऊँचा उठाने के लिए पर्याप्त न हो; क्योंकि "मनुष्य का चरम ईश्वर का अवसर है।" लेखक ने उपरोक्त भविष्यवाणी और उसके आशीर्वाद का अनुभव किया है। इस प्रकार वह मनुष्यों को अपनी शारीरिकता त्यागने और आध्यात्मिकता प्राप्त करने की शिक्षा देता है। यह आत्म-त्याग के माध्यम से किया जाता है। सार्वभौमिक प्रेम क्रिश्चियन साइंस में दिव्य मार्ग है।

11. 257: 24-29

किसने मानव की इच्छा और शोक की मांगों को पूरा करने के लिए पर्याप्त जीवन या प्रेम को पर्याप्त पाया, - आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अभी भी इच्छाओं को पूरा करने के लिए? अनंत मन एक परिमित रूप तक

सीमित नहीं हो सकता है, या मन अपने अनंत चरित्र को अटूट प्रेम, अनन्त जीवन, सर्वशक्तिमान सत्य के रूप में खो देगा।

12. 518: 13-23

ईश्वर स्वयं का विचार देता है, अधिक के लिए कम करने के लिए, और बदले में, उच्च हमेशा कम की रक्षा करता है। सभी को एक ही सिद्धांत, या पिता, को एक भव्य भाईचारे में रखते हुए, आत्मा में समृद्ध गरीबों की मदद करते हैं। और धन्य है वह आदमी जो दूसरे की भलाई में अपनी भलाई जानता है, अपने भाई की आवश्यकता को देखता है और उसकी आपूर्ति करता है। प्रेम कमजोर आध्यात्मिक को, अमरता, और अच्छाई देता है, जो सभी के माध्यम से चमकता है जैसे कि कली के माध्यम से खिलता है। ईश्वर की सभी विविध अभिव्यक्तियाँ स्वास्थ्य, पवित्रता, अमरता - अनंत जीवन, सत्य और प्रेम को दर्शाती हैं।

13. 469: 30-5

एक पिता, यहां तक कि भगवान के साथ, मनुष्य का पूरा परिवार भाइयों होगा; और एक मन और उस ईश्वर, या भलाई के साथ, मनुष्य का भाईचारा प्रेम और सत्य से मिलकर बना होगा, और इसमें सिद्धांत और आध्यात्मिक शक्ति की एकता होगी जो दिव्य विज्ञान का गठन करती है।

14. 410: 14-21

ईश्वर में हमारी आस्था का हर परीक्षण हमें मजबूत बनाता है। आत्मा से पार पाने के लिए भौतिक स्थिति जितनी कठिन लगती है, उतनी ही मजबूत हमारे विश्वास और हमारे प्रेम को शुद्ध करना चाहिए। प्रेरित यूहन्ना कहता है: "प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, ... जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।" यहाँ क्रिश्चियन साइंस की एक निश्चित और प्रेरित घोषणा है।

15. 572: 12-17

प्रेम क्रिश्चियन साइंस के कानून को पूरा करता है, और इस दिव्य सिद्धांत की कुछ भी कमी, समझा और प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है, कभी भी सर्वनाश की दृष्टि प्रस्तुत कर सकता है, सत्य के साथ त्रुटि के सात मुहरों को खोल सकता है, या पाप, बीमारी और मृत्यु के असंख्य भ्रमों को उजागर कर सकता है।

16. 225: 21-22

प्रेम मुक्तिदाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति

के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6